

SARS-CoV-2 का नया रूप

चर्चा में क्यों?

हाल ही में कई देशों में [SARS-CoV-2](#) का एक नया प्रतरूप उभरकर सामने आया है। नवीनतम शोध से संकेत मिला है कि वायरस अपनी अवस्था में तेज़ी से उत्परिवर्तन (Mutation) कर रहा है, जो COVID-19 के लिये वर्तमान में उपलब्ध टीकों को नष्प्रभावी कर सकता है।

- SARS-CoV-2 वह वायरस है जो COVID-19 नामक बीमारी के लिये उत्तरदायी है।

प्रमुख बढि

उत्परिवर्तन का अर्थ:

- उत्परिवर्तन एक जीव या किसी वायरस की कोशिका के जीनोम में एक परिवर्तन है जो कम या ज़्यादा स्थायी होता है और जसि कोशिका या वायरस के वंशजों में संचारित किया जा सकता है।
- जीवों के जीनोम की सभी संरचनाएँ [डीऑक्सी राइबोन्यूक्लिक एसिड](#) (Deoxyribonucleic Acid- DNA) से बनी होती हैं, जबकि वायरल जीनोम की संरचनाएँ DNA या [राइबो न्यूक्लिक एसिड](#) (Ribo Nucleic Acid- RNA) की बनी हो सकती हैं।

RNA उत्परिवर्तन बनाम DNA उत्परिवर्तन:

- जब कोशिकाएँ वृद्धि करती हैं तो उनके भीतर का DNA कोशिकाओं की नई प्रतियाँ बनाने के लिये प्रतिकृति भी बनाता है। प्रतिकृति निर्माण के दौरान यादृच्छिक त्रुटियों को नए DNA में प्रवेश किया जाता है।
- RNA वायरस में उत्परिवर्तन प्रायः तब होता है जब स्वयं की प्रतिकृति बनाते समय वायरस से कोई चूक हो जाती है।
 - यदि उत्परिवर्तन/म्यूटेशन के परिणामस्वरूप प्रोटीन संरचना में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है तो ही किसी बीमारी के प्रकार में बदलाव हो सकता है।

उत्परिवर्तन का महत्त्व:

- विकास:
 - अधिकांश उत्परिवर्तन वायरस के लिये हानिकारक होते हैं। परंतु अगर कोई वायरस इस स्थिति में लाभ प्राप्त करता है, तो वह बेहतर संक्रामकता और संचरण की स्थिति में आ जाता है तथा प्रतिरक्षा वकिसति कर चुकी आबादी भी इससे प्रभावित हो सकती है।
 - उदाहरणार्थ: **D614G** नामक एक उत्परिवर्तन के कारण जनवरी 2020 में कोरोनावायरस **स्पाइक प्रोटीन के अमीनो अम्ल की स्थिति में परिवर्तन हुआ।**
 - इस नए उत्परिवर्तित कोरोनावायरस की वजह से और अधिक संक्रामक वायरस सामने आया। वर्तमान में यह उत्परिवर्तित वायरस ही दुनिया भर में फैलने वाले कोरोनावायरस के 99% से अधिक मामलों के लिये ज़िम्मेदार है।
 - यह कोरोनावायरस स्पाइक प्रोटीन है जो संक्रमण की प्रक्रिया को शुरू करने के लिये मानव प्रोटीन का प्रयोग करता है।
 - इसमें होने वाले परिवर्तन संभवतः वायरस की संक्रामक क्षमता, गंभीर बीमारी का कारण बनने की क्षमता या टीकों द्वारा वकिसति की गई प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया संबंधी क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं।

कोरोनावायरस के RNA जीनोम की विशेषताएँ:

- कोरोनावायरस में दो विशेषताओं के साथ एक RNA जीनोम होता है:
 - **सबसे बड़ा जीनोम:**
RNA वायरस के 30,000 न्यूक्लियोटाइड्स (न्यूक्लिक एसिड यूनटि) में सबसे बड़ा जीनोम होता है।
 - **स्थिरता:**
कोरोनावायरस में स्थिर जीनोम होते हैं, ये इन्फ्लूएंज़ा वायरस की तुलना में लगभग एक हजार गुना धीमी गति से बदलते हैं, जो कि श्वसन रोग के लिये ज़िम्मेदार RNA वायरस भी हैं।

कोरोनोवायरस प्रतरूप में हालिया RBD उत्परिवर्तन:

- कोरोनावायरस के तीन प्रमुख 'रसिप्टर-बाइंडिंग डोमेन' (RBD) उत्परिवर्तन रूप K417N /T, E484K और [N501Y](#) दक्षिण अफ्रीका और ब्राज़ील में पाए गए हैं।
 - ब्रिटन के प्रतरूप में N501Y, P681H उत्परिवर्तन पाया गया है।
- स्पाइक प्रोटीन के 'रसिप्टर-बाइंडिंग डोमेन' उत्परिवर्तन से बने वायरस में प्राकृतिक संक्रमण या टीकाकरण के परिणामस्वरूप वकिसति होने वाले एंटीबॉडी से बचने की सर्वाधिक क्षमता है।
- 'रसिप्टर-बाइंडिंग डोमेन' उत्परिवर्तन के माध्यम से 'सेलुलर रसिप्टर' वायरस को कोशिकाओं को संक्रमित करने की अनुमति देता है और 'एंटी-आरबीडी एंटीबॉडी वायरस' को अप्रभावी करता है।

उभरते हुए प्रतरूपों के खिलाफ वैक्सीन परीक्षण:

- प्रयोगशालाओं में अप्रत्यक्ष परीक्षण के माध्यम से यह आकलन किया जाता है कि क्या एक उभरता हुआ प्रतरूप प्राकृतिक संक्रमण या टीकाकरण के बाद वकिसति एंटीबॉडी से बच सकता है।
 - COVID-19 बीमारी से ठीक हुए रोगियों या टीकाकृत लोगों से सीरम (रक्त घटक जसिमें एंटीबॉडी होते हैं) प्राप्त कर मूल वायरस को अप्रभावी करने के लिये ज्ञात की गई एंटीबॉडी का परीक्षण करके यह निर्धारित करने का प्रयास किया जाता है कि क्या ये वायरस प्रतरूप वकिसति एंटीबॉडीज़ से बच जाते हैं।
 - एक सीरम या एंटीबॉडी की प्रभावशीलता 'नरिधात्मक एकाग्रता' (आईसी) या 'प्लेक रडिक्शन न्यूट्रलाइज़ेशन टाइट्र' (PRNT) मूल्य के रूप में व्यक्त की जाती है।
 - IC50 या PRNT50 सीरम या एंटीबॉडी की आपसी सांद्रता का मान है जो नमूने में 50% वायरस को अप्रभावी करता है।

उभरते हुए प्रतरूप के खिलाफ टीके की प्रभावकारिता:

- मॉडरना और फाइज़र/बायोटेक दोनों इस बात से सहमत हैं कि उनके टीकों ने दक्षिण अफ्रीकी प्रतरूप के खिलाफ कम सुरक्षा प्रदान की है। कहा जा रहा है इन प्रतरूपों को कवर करने के लिये दोनों कंपनियों नए टीके को वकिसति करने पर काम कर रही हैं।
- दक्षिण अफ्रीका में मूल वायरस के खिलाफ वकिसति प्रतरिक्सा के बाद भी नए प्रतरूपों से संक्रमित होने के मामले सामने आए हैं।

भारत के संदर्भ में:

- भारत में अब तक केवल यात्रियों में कोरोनावायरस के ब्रिटन प्रतरूप के मामले सामने आए हैं। इसके स्थानीय प्रसारण संबंधी मामले सामने नहीं आए हैं।
- साक्ष्य बताते हैं कि वर्तमान टीके अब भी कोरोनावायरस के ब्रिटन प्रतरूप के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करेंगे, भले ही उनकी प्रभावकारिता कम हो।
 - [आईसीएमआर](#)-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी और भारत बायोटेक के वैज्ञानिकों ने कोरोनावायरस के ब्रिटन प्रतरूप के खिलाफ अपने टीके [कोवैक्सिनि](#) का परीक्षण किया।
 - इन परिणामों में यह बात सामने आई है कि वैक्सीन ब्रिटन प्रतरूप पर समान रूप से काम करेगी।
- कम हो रहे COVID-19 मामलों के साथ-साथ भारत को मास्क पहनने संबंधी नियमों को सख्ती से लागू करना चाहिये और भीड़-भाड़ को कम करके सक्रियता से ब्रिटन प्रतरूप से संक्रमित लोगों की पहचान करनी चाहिये।
- भारत को अक्टूबर 2020 से दक्षिण अफ्रीका और दिसंबर 2020 से ब्राज़ील की यात्रा करने वाले लोगों की भी पहचान कर लेनी चाहिये।
- जीनोमिक निगरानी बढ़ाने के लिये एक अंतर-मंत्रालयी समूह 'इंडियन SARS-CoV-2 जीनोमिक्स कंसोर्टियम' (INSACOG) की स्थापना इस दिशा में एक अच्छा कदम है।
 - जीनोमिक निगरानी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर रोगजनक संचरण और विकास पर नज़र रखने के लिये जानकारी का एक समृद्ध स्रोत उत्पन्न कर सकती है।

स्रोत-द हृदय